ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 167-172**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

प्रेमचंद के कथा साहित्य में "आदिवासी"

डॉ0 रुद्र चरण माझी
प्राध्यापक–हिन्दी, कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेस, किस् मानित विश्वविद्यालय, भुबनेश्वर (ओड़िशा) भारत

Received-25.08.2025, Revised-08.09.2025, Accepted-15.09.2025 **E-mail: rudra.majhi2019@gmail.com**

सारांशः मुंशी प्रेमचंद (धनपत राय श्रीवास्तव, ३१ जुलाई १८८० – ८ अक्टूबर १९३६) हिंदी और उर्दू के उपन्यास सम्राट तथा महान कहानीकार हैं, जिन्होंने अपने कथासाहित्य के माध्यम से भारतीय समाज की वास्तविकताओं किसान–मजदूरों का शोषण, जाति–प्रथा, दहेज, विधवा–विवाह, स्त्री–उत्पीड़न, सामंती व्यवस्था, आर्थिक असमानता और स्वाधीनता संग्राम को मार्मिक ढंग से उकेरा। उन्होंने लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास और तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं, जिनमें प्रमुख उपन्यास हैं सेवासदन (१९१८), प्रेमाश्रम (१९२२), रंगभूमि (१९२५), निर्मला (१९२७), गबन (१९२८), कर्मभूमि (१९३२), गोदान (१९३६, उनका अंतिम पूर्ण उपन्यास) तथा अपूर्ण मंगलसूत्र। कहानियों में कफन, ईदगाह, पूस की रात, नमक का दारोगा, पंच परमेश्वर, ठाकुर का कुआँ, दो बैलों की कथा, बड़े भाई साहब, बूढ़ी काकी, सद्गति आदि सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं, जो अधिकतर मानसरोवर (८ भागों में) संग्रह में संकलित हैं। उनके कथासाहित्य की मुख्य विशेषताएँ आदर्शोन्मुख यथार्थवाद हैं । वे जीवन की कठोर वास्तविकताओं का चित्रण करते हुए भी नैतिक मूल्यों, मानवतावाद और सामाजिक सुधार की ओर संकेत करते हैं। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी और उपन्यास को तिलिस्मी–ऐयारी से मुक्त कर जन–जीवन की सच्चाई पर केंद्रित किया, सरल–प्रभावशाली भाषा (खड़ी बोली मिश्रित उर्दू–हिंदी) अपनाई, बहुस्तरीय चरित्र–चित्रण किया तथा प्रगतिशील विचारधारा (प्रगतिशील लेखक संघ के संस्थापक सदस्य) को अपनाते हुए शोषण–विरोधी स्वर बुलंद किया। उनका साहित्य १९१८ से १९३६ तक के 'प्रेमचंद युग' का प्रतीक है, जो आज भी भारतीय समाज की समस्याओं की प्रासंगिकता रखता है और उन्हें 'उपन्यास सम्राट' तथा 'कलम का सिपाही' कहा जाता है।

कुंजीभूत शब्द– **स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्रप्रेम की अलख, वैश्विक पटल, संस्कृति, संस्कारों, वसुधैव कुटुम्बकम, भाषा का विकास।**

मुंशी प्रेमचंद के कथा साहित्य में आदिवासी (जनजातीय) जीवन और चरित्रों पर विशेष या विस्तृत ध्यान नहीं दिया गया है, क्योंकि उनका मुख्य फोकस ग्रामीण भारत के किसान, मजदूर, दलित और पिछड़े वर्गों के शोषण, जाति–व्यवस्था तथा आर्थिक असमानता पर केंद्रित रहा। उनके अधिकांश उपन्यासों और कहानियों (जैसे गोदान, सद्गति, कफन, ठाकुर का कुआँ आदि) में दलित और पिछड़ी जातियों (चमार, भंगी, महतो आदि) के पात्र प्रमुख हैं, पर आदिवासी समुदाय (जैसे गोंड, संथाल आदि) का चित्रण बहुत सीमित है।

'सद्गति' कहानी में चिखुरी गोंड नामक एक आदिवासी चरित्र है, जो पंडित दासीराम द्वारा शोषित दलित दुखी को बचाने का प्रयास करता है और ब्राह्मणवाद के विरुद्ध आवाज उठाने का प्रतीक बनता है यहाँ आदिवासी को सहानुभूतिपूर्ण लेकिन सहायक भूमिका में दिखाया गया है।' गोदान' उपन्यास में जंगल–शिकार के प्रसंग में एक अनाम 'वन–कन्या' (आदिवासी युवती) का वर्णन मिलता है, जिसे प्रेमचंद ने श्रमशील, साहसी, सेवा–भाव से युक्त और स्वाभिमानी के रूप में चित्रित किया है उसका मांसल शरीर और प्राकृतिक सौंदर्य का उल्लेख मेहता को आकर्षित करता है, पर वह पारंपरिक सौंदर्य मानदंडों में 'कुरूप' कहलाती है; कई आलोचक इसे उपन्यास का सर्वश्रेष्ठ पात्र मानते हैं, क्योंकि वह मॉडर्न, मध्यवर्गीय मालती के विपरीत मानवीय मूल्यों की मिसाल है।

कुल मिलाकर, प्रेमचंद ने आदिवासियों को मुख्यधारा के ग्रामीण यथार्थ से अलग रखा, उनकी संस्कृति, संघर्ष या जीवन–शैली का गहन चित्रण नहीं किया वे मुख्यतः दलित–किसान विमर्श के माध्यम से सामाजिक सुधार पर जोर देते हैं। आदिवासी साहित्य की मुख्यधारा में प्रेमचंद का योगदान अप्रत्यक्ष है, और आधुनिक आदिवासी लेखकों ने उनकी परंपरा से आगे बढ़कर जनजातीय मुद्दों को स्वतंत्र विमर्श बनाया है।

प्रेमचन्द द्वारा रचित कहानी "सद्गति" में चिखुरी गोंड एक सहायक चरित्र है, जो दुखी चमार के साथ संक्षिप्त लेकिन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रेमचंद की यह कहानी सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और शोषण जैसे मुद्दों को उजागर करती है और चिखुरी गोंड का चरित्र इन मुद्दों को और गहराई देता है। विडंबना यह है कि चमार को तो एक किरेदार कि नाम (दुखी) है। 'सद्गति' कहानी में चिखुरी गोंड का चरित्र संक्षिप्त होते हुए भी महत्वपूर्ण है। वह सहानुभूतिपूर्ण, व्यावहारिक और कुछ हद तक आक्रामक स्वभाव का है, जो सामाजिक असमानता और शोषण की पृष्ठभूमि में अपनी सीमाओं के साथ जी रहा है।

चिखुरी गोंड दुखी के प्रति सहानुभूति दिखाता है, जब वह उसे भूखा और थका हुआ देखता है। प्रेमचंद लिखते हैं "दुखी ने चिलम पीकर फिर कुल्हाड़ी सँभाली। दम लेने से जरा हाथों में ताकत आ गई थी। कोई आधा घण्टे तक फिर कुल्हाड़ी चलाता रहा। फिर बेदम होकर वहीं सिर पकड़ के बैठ गया। इतने में वही गोड़ आ गया। बोला, 'क्यों जान देते हो बूढ़े दादा, तुम्हारे फाड़े यह गाँठ न फटेगी। नाहक हलाकान होते हो।' दुखी ने माथे का पसीना पोंछकर कहा, 'अभी गाड़ी भर भूसा ढोना है भाई !'गोंड़– 'कुछ खाने को मिला कि काम ही कराना जानते हैं। जाके मांगते क्यों नहीं ?' दुखी–कैसी बात करते हो चिखुरी, ब्राह्मण की रोटी हमको पचेगी !' गोंड– पचने को पच जायगी, पहले मिले तो। मूंछों पर ताव देकर भोजन किया और आराम से सोये, तुम्हें लकड़ी फाड़ने का हुक्म लगा दिया। जमींदार भी कुछ खाने को देता है। हाकिम भी बेगार लेता है, तो थोड़ी बहुत मजदूरी देता है। यह उनसे भी बढ़ गये, उस पर धर्मात्मा बनते हैं।

प्रेमचंद की कहानी "सद्गति" में चिखुरी गोंड का यह संवाद दुखी चमार के प्रति गहरी सहानुभूति और सामाजिक जागरूकता का प्रतीक है। दुखी भूखा–प्यासा और थका हुआ होने के बावजूद बिना भोजन या आराम के पंडित घासी राम के लिए लकड़ी फाड़ने का कठिन काम करता है, जिससे वह बेदम होकर बैठ जाता है। चिखुरी उसे देखकर व्यथित होकर कहता है कि वह व्यर्थ जान दे रहा है, क्योंकि यह गाँठ नहीं फटेगी, और पूछता है कि क्या खाने को मिला या सिर्फ काम ही कराना जानते हैं। जब दुखी ब्राह्मण की रोटी पचने की बात कहकर मना करता है, तो चिखुरी व्यंग्यात्मक और क्रोधपूर्ण स्वर में जवाब देता है कि पहले तो मिले, पचने की बात बाद में; वह पंडितों की ढोंगी धर्मात्मा छवि पर तीखा प्रहार करता है वे मूंछें ताव देकर खाते–पीते और सोते हैं,

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

फिर भी बेगार मंगवाते हैं, जबकि जमींदार और हाकिम भी थोड़ी मजदूरी देते हैं। यह संवाद चिखुरी को एक सहानुभूतिशील, विद्रोही और यथार्थवादी चरित्र के रूप में स्थापित करता है, जो दलित–शोषण की क्रूरता को उजागर करता है और दुखी की अंध–श्रद्धा तथा आत्म–शोषण की मानसिकता पर प्रकाश डालता है, जिससे कहानी का मुख्य विमर्श जाति–आधारित अमानवीय शोषण और धार्मिक पाखंड और गहरा हो जाता है। चिखुरी गोंड सामाजिक व्यवस्था और उसके अन्याय को समझता है। वह दुखी को सलाह देता है कि पंडित के घर में काम करने से उसे कुछ खाने को मिल सकता है, लेकिन साथ ही वह यह भी जानता है कि दुखी जैसे निम्न जाति के व्यक्ति को वहां सम्मान नहीं मिलेगा।

चिखुरी गोंड का चरित्र के माध्यम से प्रेमचंद ने बहुजन समाज कि आपसी एकता को दिखाए हैं। चिखुरी गोंड दुखी की मौत हो जाने पर सबसे कह दिया "खबरदार, मुर्दा उठाने मत जाना। अभी पुलिस की तहकीकात होगी। दिल्लगी है कि एक गरीब की जान ले ली। पंडितजी होंगे, तो अपने घर के होंगे। लाश उठाओगे तो तुम भी पकड़ जाओगे।" इसके बाद ही पंडितजी पहुँचे; पर चमरीने का कोई आदमी लाश उठा लाने को तैयार न हुआ, हाँ दुखी की खी और कन्या दोनों हाय–हाय करती वहाँ चलीं और पंडितजी के द्वार पर आकर, सिर पीट–पीटकर रोने लगीं। उनके साथ दस–पाँच और चमारिने थीं। कोई रोती थी, कोई समझाती थी, पर चमार एक भी न था। पण्डितजी ने चमारों को बहुत धामकाया, समझाया, मिन्नत की, पर चमारों के दिल पर पुलिस का रोब छाया हुआ था, एक भी न मिनका। आखिर निराश होकर लौट आये।"

प्रेमचंद की कहानी "सद्गति" में चिखुरी गोंड का चरित्र बहुजन समाज (दलित, आदिवासी और अन्य शोषित वर्गों) की आपसी एकता और सामूहिक प्रतिरोध का प्रतीक है। दुखी चमार की मौत के बाद जब पंडित घासीराम चमारों से लाश उठवाने की कोशिश करता है, तो चिखुरी गोंड सबसे आगे आकर चेतावनी देता है। यह संवाद चिखुरी की दूरदर्शिता, साहस और शोषण के खिलाफ विद्रोही चेतना को दर्शाता हैकृवह पुलिस के डर का इस्तेमाल कर चमारों को एकजुट करता है, ताकि वे पंडित के दबाव में न आएँ। परिणामस्वरूप, कोई भी चमार लाश उठाने को तैयार नहीं होता; केवल महिलाएँ (चमरौने) रोती–पीटती पंडित के द्वार पर पहुँचती हैं, जबकि पुरुष अनुपस्थित रहते हैं। इससे पंडित निराश होकर लौट जाता है और अंततः खुद लाश को खींचकर फेंकता है। चिखुरी के माध्यम से प्रेमचंद बहुजन एकता की संभावना दिखाते हैं आदिवासी (गोंड) और दलित (चमार) के बीच सहानुभूति, सहयोग और सामूहिक असहमति से उच्च वर्णीय शोषण को चुनौती दी जा सकती है, जो कहानी के जाति–आधारित अमानवीयता और पाखंड के विमर्श को मजबूत करता है तथा शोषितों में जागरूकता की किरण जगाता है।

'सद्गति', 'कफन' और 'ठाकुर का कुआँ' जैसी कहानियों में दलितों का चित्रण शोषण, भूख, अंधविश्वास, आत्म–शोषण और अमानवीय जाति–व्यवस्था के शिकार के रूप में किया गया है, जहाँ वे पीड़ित, असहाय और कभी–कभी नैतिक रूप से कमजोर (जैसे 'कफन' में घीसू–माधव) दिखते हैं, पर यह यथार्थवादी चित्रण है जो उनकी दयनीय स्थिति को उजागर करता है, न कि संवेदना की कमी। वहीं 'सद्गति' में ही चिखुरी गोंड को सचेतन, विद्रोही और सहानुभूतिशील के रूप में चित्रित किया गया है वह दुखी को शोषण से बचाने की कोशिश करता है, पंडित के पाखंड पर तीखा प्रहार करता है और मौत के बाद चमारों को लाश न उठाने के लिए प्रेरित कर बहुजन एकता का प्रतीक बनता है। यह आदिवासी को शोषित से अधिक जागरूक प्रतिरोधक के रूप में दिखाता है, जो प्रेमचंद की दृष्टि में आदिवासियों की अपेक्षाकृत स्वतंत्रता, साहस और कम सामाजिक बंधनों को रेखांकित करता है। कुल मिलाकर, प्रेमचंद दलितों पर अधिक गहराई से संवेदनशील हैं क्योंकि उनका मुख्य विमर्श ग्रामीण दलित–किसान शोषण है, जबकि आदिवासी चरित्र (जैसे चिखुरी) सहायक भूमिका में विद्रोही चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं यह अलग विचार नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना की वास्तविकता का यथार्थ चित्रण है।

प्रेमचंद के उपन्यास गोदान में आदिवासियों (वन–कन्या या आदिवासी युवती) का प्रसंग शिकार के दौरान आता है, जहाँ प्रोफेसर मेहता और मिस मालती जंगल में शिकार करते हुए एक नदी के किनारे पहुँचते हैं। मेहता द्वारा मारी गई एक चिड़िया नदी की धारा में बहने लगती है, और मेहता उसे पकड़ने के लिए पानी में कूदते हैं लेकिन सफल नहीं होते। तभी एक झोंपड़ी से निकलकर एक अनाम आदिवासी युवती (वन–कन्या) साड़ी को जांघों तक चढ़ाकर पानी में उतरती है, एक क्षण में चिड़िया पकड़ लेती है और मेहता को दिखाते हुए कहती है "पानी से निकल जाओ बाबूजी, तुम्हारी चिड़िया यह है।"

उपरोक्त कथन के माध्यम से युवती की श्रमशीलता, साहस, प्राकृतिक कुशलता और सेवा–भाव को रेखांकित करता है। प्रेमचंद उसे मांसल, स्वाभिमानी और मानवीय मूल्यों से युक्त बताते हैं वह मेहता–मालती को बाजरे की रोटी बनाकर भूख मिटाती है। पारंपरिक सौंदर्य–मानदंडों में 'कुरूप' कहलाने के बावजूद, वह मॉडर्न मध्यमवर्गीय मालती के विपरीत प्राकृतिक, शुद्ध और सर्वश्रेष्ठ पात्र के रूप में उभरती है। इससे प्रेमचंद आदिवासी जीवन की स्वतंत्रता, सरलता और मानवतावादी छवि को ग्रामीण–शहरी विपरीतता के संदर्भ में उजागर करते हैं, जो उपन्यास के यथार्थवादी और सामाजिक विमर्श को समृद्ध करता है।

प्रेमचंद इस प्रसंग को अधिक वर्णन करते हुए लिखते हैं "मेहता युवती की चपलता और साहस देखकर मुग्ध हो गये। तुरंत किनारे और हाथ चलाये और दो मिनट में युवती के पास जा खड़े हुए। युवती का रंग था तो काला और वह भी गहरा, कपड़े बहुत ही मैले और फूहड़ आभूषण के नाम पर केवल हाथों में दो–दो मोटी चूड़ियाँ, सिर के बाल उलझे अलग–अलग। मुख–मंडल का कोई भाग ऐसा नहीं, जिसे सुंदर या सुघड़ कहा जा सके, लेकिन उस स्वच्छ, निर्मल जलवायु ने उसके कालेपन में ऐसा लावण्य भर दिया था और प्रकृति की गोद में पलकर उसके अंग इतने सुडौल, सुगठित और स्वच्छन्द हो गये थे कि यौवन का चित्र खींचने के लिए उससे सुंदर कोई रूप न मिलता। उसका सबल स्वास्थ्य जैसे मेहता के मन में बल और तेज भर रहा था। मेहता ने उसे धन्यवाद देते हुए कहा– तुम बड़े मौके से पहुँच गयीं, नहीं मुझे न जाने कितनी दूर तैरना पड़ता। युवती ने प्रसन्नता से कहा मैंने तुम्हें तैरते आते देखा, तो दौड़ी। शिकार खेलने आये होंगे? 'हाँ, आये तो थे शिकार ही खेलने; मगर दोपहर हो गया और यही चिड़िया मिली है। 'तेंदुआ मारना चाहो, तो मैं उसका ठौर दिखा दूँ। रात को यहाँ रोज़ पानी पीने आता है। कभी–कभी दोपहर में भी आ जाता है।' फिर ज़रा सकुचाकर सिर झुकाये बोली उसकी खाल हमें देनी पड़ेगी। चलो मेरे द्वार पर। वहाँ पीपल की छाया है। यहाँ धूप में कब तक खड़े रहोगे। कपड़े भी तो गीले हो गये हैं। मेहता ने उसकी देह में चिपकी हुई गीली साड़ी की ओर देखकर कहा– तुम्हारे कपड़े भी तो गीले हैं। उसने लापरवाही से कहा ऊँह हमारा क्या, हस तो जंगल के हैं। दिन–दिन भर धूप और पानी में खड़े रहते हैं। तुम थोड़े ही रह सकते हो। लड़की कितनी समझदार है और बिलकुल गँवार। 'तुम खाल लेकर क्या करेगी?' 'हमारे दादा बाजार में बेचते हैं। यही तो हमारा काम है।''लेकिन दोपहरी यहाँ काटे, तो तुम खिलाओगी क्या?' युवती ने लजाते हुए कहा तुम्हारे खाने लायक हमारे घर में क्या है। मक्के की रोटियाँ खाओ, जो धरी हैं। चिडिये का सालन पका दूँगी। तुम बताते जाना जैसे बनाना हो। थोड़ा–सा दूध भी है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

हमारी गैया को एक बार तेंदुए ने घेरा था। उसे सींगों से भगाकर भाग आयी, तब से तेंदुआ उससे डरता है। 'लेकिन मैं अकेला नहीं हूँ। मेरे साथ एक औरत भी है।' 'तुम्हारी घरवाली होगी?' 'नहीं, घरवाली तो अभी नहीं है, जान–पहचान की है।' 'तो मैं दौड़कर उनको बुला लाती हूँ। तुम चलकर छाँह में बैठो।' 'नहीं–नहीं, मैं बुला लाता हूँ।' 'तुम थक गये होगे। शहर का रहैया जंगल में काहे आते होंगे। हम तो जंगली आदमी हैं। किनारे ही तो खड़ी होंगी।"

प्रेमचंद गोदान में इस प्रसंग को विस्तार से वर्णित करते हुए आदिवासी युवती (वन–कन्या) को एक आदर्श, प्राकृतिक और मानवीय छवि प्रदान करते हैं। मेहता उसकी चपलता, साहस और कुशलता से मुग्ध हो जाते हैं। वह पानी में उतरकर चिड़िया पकड़ लेती है, मेहता को धन्यवाद स्वीकार करती है और जंगल की कठोरता में भी सहज सेवा–भाव दिखाती है। प्रेमचंद उसके काले रंग, मैले कपड़े, उलझे बालों और सादे आभूषणों का वर्णन करते हुए पारंपरिक सौंदर्य–मानदंडों को चुनौती देते हैं। उसका कालापन स्वच्छ जलवायु और प्रकृति की गोद में पलने से लावण्यपूर्ण और यौवन का चित्र बन जाता है; अंग सुडौल, सुगठित और स्वच्छंद हैं, जो सबल स्वास्थ्य से मेहता के मन में बल भरते हैं। युवती का संवाद। तेंदुआ दिखाने की पेशकश, खाल बेचने का व्यवसाय, बाजरे की रोटी और चिड़िया का सालन खिलाने की सादगी, मालती को बुलाने की चिंता। उसकी समझदारी, स्वाभिमान, लज्जा और जंगली जीवन की सहजता को उजागर करता है। प्रेमचंद यहां शहरी मध्यमवर्गीय (मेहता–मालती) की नाजुकता के विपरीत आदिवासी जीवन की श्रमशीलता, निर्मलता और मानवतावादी मूल्यों को सर्वश्रेष्ठ बताते हैं, जो उपन्यास में ग्रामीण–प्राकृतिक यथार्थ और सामाजिक विपरीतता के विमर्श को गहराई प्रदान करता है। कई आलोचक इसे गोदान का सर्वश्रेष्ठ पात्र मानते हैं।

प्रेमचंद उस आदर्शवादी वनकन्या के बारे में अधिक जानकारी देते हुए लिखते हैं " जब तक मेहता कुछ बोले, वह हवा हो गयी। मेहता ऊपर चढ़कर पीपल की छाँह में बैठे। इस स्वच्छंद जीवन से उनके मन में अनुराग उत्पन्न हुआ। सामने की पर्वतमाला दर्शन–तत्व की भाँति अगम्य और अत्यन्त फैली हुई, मानो जान का विस्तार कर रही हो, मानो आत्मा उस जान को, उस प्रकाश को, उस अगम्यता को, उसके प्रत्यक्ष विराट रूप में देख रही हो। दूर के एक बहुत ऊँचे शिखर पर एक छोटा–सा मंदिर था, जो उस अगम्यता में बुद्धि की भांति ऊँचा, पर खोया हुआ–सा खड़ा था, मानो वहाँ तक पर मारकर पक्षी विश्राम लेना चाहता है और कहीं स्थान नहीं पाता। मेहता इन्हीं विचारों में डूबे हुए थे कि युवती मिस मालती को साथ लिये आ पहुँची, एक वन–पुष्प की भांति धूप में खिली हुई. दूसरी गमले के फूल की भांति धूप में मुरझायी और निर्जीव।"

प्रेमचंद गोदान में इस प्रसंग को विस्तार से चित्रित करते हुए आदिवासी युवती (वन–कन्या) को एक आदर्शवादी, स्वच्छंद और प्राकृतिक जीवन की प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। युवती मेहता को छोड़कर "हवा हो गयी" (अचानक गायब हो जाती है), जिससे मेहता पीपल की छाँह में बैठकर उसके स्वच्छंद जीवन से अनुराग महसूस करते हैं। प्रेमचंद प्रकृति का वर्णन दार्शनिक स्तर पर करते हैं। सामने की पर्वतमाला दर्शन–तत्व की भाँति अगम्य और विस्तृत दिखती है, जो जान (जीवन/चेतना) के विस्तार और आत्मा के विराट रूप का प्रतीक है; दूर का मंदिर बुद्धि की भाँति ऊँचा लेकिन खोया–सा है, जैसे पक्षी विश्राम ढूँढता है पर स्थान नहीं पाता। यह शहरी बुद्धिवादी जीवन की सीमाओं और प्रकृति की अनंतता के बीच विरोधाभास को रेखांकित करता है। तभी युवती मिस मालती को साथ लेकर लौटती हैकृवह वन–पुष्प की भाँति धूप में खिली हुई (प्राकृतिक, जीवंत, स्वाभाविक सौंदर्य वाली), जबकि मालती गमले के फूल की भाँति धूप में मुरझायी और निर्जीव (कृत्रिम, शहरी सभ्यता से बंधी, कमजोर) दिखती है। यह तुलना प्रेमचंद की मुख्य थीम को मजबूत करती है। आदिवासी जीवन की निर्मलता, श्रमशीलता और मानवीय मूल्य शहरी मध्यमवर्गीय जीवन से श्रेष्ठ हैं; युवती का चरित्र प्रकृति–निकट, स्वतंत्र और सेवाभावी आदर्श के रूप में उभरता है, जो उपन्यास में ग्रामीण–प्राकृतिक यथार्थ और आधुनिकता के बीच विपरीतता को गहराई देता है तथा कई आलोचकों द्वारा इसे गोदान का सर्वश्रेष्ठ पात्र माना जाता है।

गोदान उपन्यास में आदिवासी लड़की को जब पता चलता है की मालती को धूप लग गई है तो बिना बिलंब किए उसके उपचार के लिए कशिश करती है । प्रेमचंद इस घटना को जिक्र करते हुए लिखते हैं " युवती हाथों में आटा भरे, सिर के बाल बिखेरे, आँखे धुएँ से लाल और सजल, सारी देह पसीने में तर, जिससे उसका उभरा हुआ वक्ष साफ झलक रहा था, आकर खड़ी हो गयी और मालती को आँखें बन्द किये पड़ी देखकर बोली बाई को क्या हो गया है? मेहता बोले सिर में बड़ा दर्द है। 'पूरे सिर में है कि आधे में?' 'आधे में बतलाती हैं।' 'दाई ओर है, कि बाई ओर?' 'बाई ओर।' 'मैं अभी दौड़ के एक दवा लाती हूँ। घिसकर लगाते ही अच्छा हो जायगा।' 'तुम इस धूप में कहाँ जाओगी?' युवती ने सुना ही नहीं। वेग से एक ओर जाकर पहाड़ियों में छिप गयी। कोई आधा घंटे बाद मेहता ने उसे ऊँची पहाड़ी पर चढ़ते देखा। दूर से बिलकुल गुड़िया–सी लग रही थी। मन में सोचा इस जंगली छोकरी में सेवा का कितना भाव और कितना व्यावहारिक ज्ञान है। लू और धूप में आसमान पर चढ़ी चली जा रही है। मालती ने आँखे खोलकर देखा कहाँ गयी वह कलूटी। गजब की काली है, जैसे आबनूस का कुंदा हो। इसे भेज दो, राय साहब से कह आये, कार यहाँ भेज दें। इस तपिश में मेरा दम निकल जायगा। 'कोई दवा लेने गयी है। कहती है, उससे आधा–सीसी का दर्द बहुत जल्द आराम हो जाता है।' 'इनकी दवाएँ इन्हीं को फायदा करती हैं, मुझे न करेंगी। तुम तो इस छोकरी पर लहू हो गये हो। कितने छिछोरे हो। जैसी रूह वैसे फरिश्ते।"

प्रेमचंद के उपन्यास गोदान में यह प्रसंग आदिवासी युवती (वन–कन्या) की सेवा–भावना, सहानुभूति, व्यावहारिक ज्ञान और प्राकृतिक जीवन की सरलता को उजागर करता है। जब मालती को धूप लगने से सिर में तेज दर्द होता है, तो युवती बिना किसी हिचकिचाहट या देरी के दवा लाने दौड़ पड़ती है हाथों में आटा भरा, बाल बिखरे, आँखें धुएँ से लाल–सजल, देह पसीने से तर (जिससे उसका उभरा वक्ष झलक रहा है) वह मालती की स्थिति देखकर पूछती है, दर्द के स्थान की जाँच करती है और तुरंत पहाड़ी पर जड़ी–बूटी लेने चली जाती है। प्रेमचंद उसके वेग, साहस और सेवा–भाव को रेखांकित करते हैं वह लू–धूप में ऊँची पहाड़ी पर चढ़ती है, दूर से गुड़िया–सी लगती है। मेहता मन ही मन सोचते हैं कि इस "जंगली छोकरी" में कितना सेवा–भाव और व्यावहारिक ज्ञान है। परंतु उसकी सेवा भाव मालती को अच्छा नहीं लगती एवं विपरीत प्रतिक्रिया देते हुए युवती को "कलूटी" (काली), "आबनूस का कुंदा" कहकर तुच्छ समझती है, उसे भेज देने की बात करती है, और कहती है कि इनकी दवाएँ इन्हीं को फायदा करती हैं, उसे नहीं; वह मेहता को "छिछोरा" कहकर व्यंग्य करती है कि "जैसी रूह वैसे फरिश्ते"। यह तुलना प्रेमचंद की शहरी मध्यमवर्गीय मालती की कृत्रिमता, अहंकार, नाजुकता और सौंदर्य–मानदंडों में बंधी छवि के मुकाबले आदिवासी युवती की प्राकृतिक, श्रमशील, मानवीय और सेवाभावी छवि श्रेष्ठ को दिखाता है। युवती का यह कार्य उपन्यास में आदिवासी जीवन की निर्मलता, स्वाभिमान और मानवतावादी मूल्यों को ग्रामीण–शहरी विपरीतता के संदर्भ में स्थापित करता है। वह मालती के दर्द में भी तुरंत सहायता करती है, जबकि मालती

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

उसकी काली रंगत और जंगलीपन पर टिप्पणी करती है। कई आलोचक इसे गोदान का सर्वश्रेष्ठ पात्र मानते हैं, क्योंकि वह प्राकृतिक सौंदर्य और सेवा की मिसाल है।

मालती की इस प्रकार व्यवहार देखते हुए मेहता को कटु सत्य कहने में संकोच न होता था। मेहता मालती को उत्तर देते हुए कहा "कुछ बाते तो उसमें ऐसी है कि अगर तुम में होती, तो तुम सचमुच देवी हो जाती।' उसकी खूबियों उसे मुबारक, मुझे देवी बनने की इच्छा नहीं है। तुम जब तक यहीं बैठो, मैं युवती दो बड़े–बड़े मटके उठा लायी और बोली अभी दौड़कर पानी लाती हूँ, फिर चूल्हा जला दूँगी; और मेरे हाथ का खाओ, तो मैं 'तुम्हारी इच्छा हो, तो मैं जाकर कार लाऊँ, यद्यपि कार यहाँ आ भी सकेगी, मैं नहीं कह सकता।' 'उस कलूटी को क्यों नहीं भेज देते?' 'वह तो दवा लेने गयी है, फिर भोजन पकायेगी।' 'तो आज आप उसके मेहमान हैं। शायद रात को भी यहीं रहने का विचार होगा। रात को शिकार भी तो अच्छा मिलते हैं।' मेहता ने इस आक्षेप से चिढ़कर कहा इस युवती के प्रति मेरे मन में जो प्रेम और श्रद्धा है, वह ऐसी है कि अगर मैं उसकी ओर वासना से देखें तो आँखें फूट जायें। मैं अपने किसी घनिष्ट मित्र के लिए भी इस धूप और लू में उस ऊँची पहाड़ी पर न जाता। और हम केवल घड़ी–भर के मेहमान हैं, यह वह जानती है। वह किसी गरीब औरत के लिए भी इसी तत्परता से दौड़ जायगी। मैं विश्व–बंधुत्व और विश्व–प्रेम पर केवल लेख लिख सकता हूँ, केवल भाषण दे सकता हूँ, वह उस प्रेम और त्याग का व्यवहार कर सकती है। कहने से करना कहीं कठिन है। इसे तुम भी जानती हो।"

उपरोक्त प्रसंग में आदिवासी युवती (वन–कन्या) की मानवीयता, सेवा–भाव, त्याग और प्राकृतिक प्रेम को मेहता के माध्यम से मालती की कृत्रिमता, अहंकार और सौंदर्य–मानदंडों से बंधी सोच के विपरीत रखकर यथार्थवादी तुलना प्रस्तुत करता है। मालती युवती को बार–बार "कलूटी" कहकर तुच्छ समझती है, उसकी काली रंगत पर व्यंग्य करती है और मेहता को "छिछोरा" कहकर आरोप लगाती है कि वह युवती पर "लट्टू" (मोहित) हो गया है। मेहता कटु सत्य कहते हुए जवाब देते हैं कि युवती में ऐसी खूबियाँ हैं कि अगर मालती में होतीं तो वह सचमुच देवी हो जाती। मेहता स्पष्ट कहते हैं कि उनकी युवती के प्रति भावना प्रेम और श्रद्धा की है, वासना की नहीं अगर वासना से देखें तो आँखें फूट जाएँ। वह कहते हैं कि वह स्वयं या उनका कोई घनिष्ठ मित्र भी इतनी धूप–लू में ऊँची पहाड़ी पर दवा लेने नहीं जाता, जबकि युवती बिना किसी अपेक्षा के दवा लाती है, पानी लाती है, भोजन पकाने की तैयारी करती है। यह सब जानते हुए कि मेहता–मालती केवल घड़ी–भर के मेहमान हैं।

मेहता भी यह मानता है की विश्व–बंधुत्व और विश्व–प्रेम पर केवल लेख लिखा जा सकता है, केवल भाषण दिया जा सकता है यह सिर्फ आदिवासी ही उस प्रेम और त्याग का व्यवहार में ला सकती है। शहरी बुद्धिजीवी (मेहता–मालती) सिद्धांत और आदर्शों की बात करते हैं, लेकिन आदिवासी/ग्रामीण जीवन (युवती) उन आदर्शों को व्यवहार में उतारता है। युवती की सेवा कोई दिखावा नहीं, बल्कि सहज, स्वाभाविक और निस्वार्थ है वह किसी गरीब औरत के लिए भी यही तत्परता दिखाती। इस संवाद के माध्यम से प्रेमचंद प्राकृतिक मानवता को कृत्रिम सभ्यता से श्रेष्ठ बताते हैं युवती का चरित्र उपन्यास में सर्वश्रेष्ठ पात्र के रूप में उभरता है, जो प्रेम, त्याग और सेवा की जीवंत मिसाल है, जबकि मालती की प्रतिक्रियाएँ शहरी मध्यम वर्ग की संकीर्णता और पूर्वाग्रह को उजागर करती हैं।

परंतु मालती इस भाव को नहीं समझ पाती है और उपहास भरे से कहा "बस–बस, वह देवी है। मैं मान गयी। उसके वक्ष में उभार है, नितम्बों में भारीपन है, देवी होने के लिए और क्या चाहिए। मेहता तिलमिला उठे। तुरंत उठे, और कपडे पहने जो सूख गये थे, बंदूक उठायी और चलने को तैयार हुए। मालती ने फुंकार मारी तुम नहीं जा सकते, मुझे अकेली छोडकर। 'तब कौन जायगा?' 'वही तुम्हारी देवी।' मेहता हतबुद्धि–से खड़े थे। नारी पुरुष पर कितनी आसानी से विजय पा सकती है, इसका आज उन्हें जीवन में पहला अनुभव हुआ। वह दौड़ी हाँफती चली आ रही थी। वही कलूटी युवती, हाथ में एक झाड़ लिये हुए। समीप जाकर मेहता को कहीं जाने को तैयार देखकर बोली मैं वह जड़ी खोज लायी। अभी घिसकर लगाती हूँ; लेकिन तुम कहाँ जा रहे हो। मांस तो पक गया होगा, मैं रोटियाँ सेंक देती हूँ। दो–एक खा लेना। बाई दूध पी लेगी। ठंडा हो जाय, तो चले जाना। उसने निस्संकोच भाव से मेहता के अचकन की बटर्ने खोल दीं। मेहता अपने को बहुत रोके हुए थे। जी होता था, इस गँवारिन के चरणों को चूम लें।"

प्रेमचंद के गोदान उपन्यास में यह प्रसंग आदिवासी युवती की निस्संकोच सेवा–भावना, मानवीयता और स्वाभाविक प्रेम को मालती की संकीर्णता, व्यंग्य और अहंकार के साथ तीखे विपरीत में रखता है। मालती मेहता के युवती के प्रति श्रद्धा और प्रेम के भाव को नहीं समझ पाती और उपहास भरे लहजे में कहती है कि युवती "देवी" इसलिए है, क्योंकि उसके वक्ष में उभार और नितंबों में भारीपन है। यह टिप्पणी युवती के शारीरिक सौंदर्य को ही उसके गुणों पर हावी करके अपमानित करती है और मेहता की भावना को तुच्छ समझती है। मेहता तिलमिला उठते हैं, कपड़े पहनकर चलने को तैयार होते हैं, लेकिन मालती उन्हें अकेला छोड़ने से रोकती है और व्यंग्य से कहती है कि "वही तुम्हारी देवी" जाएगी। ठीक इसी समय युवती हाँफती हुई लौटती है, जड़ी–बूटी लेकर मालती का उपचार करने को तैयार होती है, मांस पकने और रोटियाँ सेंकने की बात करती है, और बिना किसी संकोच के मेहता की अचकन की बटनें खोलकर आराम कराने लगती है। मेहता भाव–विभोर हो जाते हैं। उनका मन होता है कि इस "गँवारिन" के चरण चूम लें। शहरी मध्यमवर्ग (मालती) की कृत्रिमता, पूर्वाग्रह और शारीरिक सौंदर्य पर आधारित मूल्यांकन के मुकाबले आदिवासी/प्राकृतिक जीवन (युवती) की निस्वार्थ सेवा, सहज मानवता और त्याग श्रेष्ठ है। युवती का व्यवहार मेहता को विश्व–बंधुत्व का जीवंत प्रमाण दिखाता है, जबकि मालती की प्रतिक्रिया शहरी संकीर्णता का प्रतीक बन जाती है।

गोदान उपन्यास में मालती एक आधुनिक, शिक्षित, शहरी मध्यमवर्गीय महिला का प्रतिनिधित्व करती है। वह सुंदर, बुद्धिमान, स्वतंत्र विचारों वाली और डॉक्टर है, लेकिन उसका चरित्र कृत्रिमता, अहंकार, संकीर्णता और सौंदर्य–मानदंडों पर आधारित पूर्वाग्रहों से भरा हुआ है। वह आदिवासी युवती की सेवा–भावना, निस्वार्थता और प्राकृतिक सौंदर्य को नहीं समझ पाती, उसे "कलूटी","गँवारिन" कहकर तुच्छ समझती है और उसके शारीरिक गुणों (वक्ष का उभार, नितंबों का भारीपन) पर व्यंग्य करके उसे केवल शारीरिक आकर्षण तक सीमित कर देती है। मालती मेहता के प्रति आकर्षण रखती है, लेकिन उसकी भावनाओं को भी उपहास का विषय बनाती है और उसे नियंत्रित करने की कोशिश करती है। प्रेमचंद के माध्यम से मालती शहरी सभ्यता की खोखलीपन, नकली आधुनिकता और मानवीय संवेदना की कमी का प्रतीक बन जाती है। वह सिद्धांतों की बात करती है, लेकिन व्यवहार में त्याग, सेवा और सच्चे प्रेम से दूर रहती है, जबकि आदिवासी युवती की सहज मानवता उसके सामने फीकी पड़ जाती है।

मालती अपनी रौब जमाने के लिए उस आदिवासी युवती को आदेश देना चाहती है, कहती है "अपनी दवाई रहने दो। नदी के किनारे, बरगद के नीचे हमारी मोटरकार खड़ी है। वहाँ और लोग होंगे। उनसे कहना, कार यहाँ लायें। दौड़ी हुई जा। युवती ने

दीन नेत्रों से मेहता को देखा। इतनी मेहनत से बूटी लायी, उसका यह अनादर। इस गँवारिन की दवा इन्हें नहीं जेंची, तो न सही, उसका मन रखने को ही जरा–सी लगवा लेतीं, तो क्या होता। उसने बूटी जमीन पर रखकर पूछा तब तक तो चूल्हा ठंडा हो जायगा बाईजी। कहो तो रोटियाँ सेंककर रख दें। बाबूजी खाना खा लें, तुम दूध पी लो और दोनों जने आराम करो। तब तक मैं मोटरवाले को बुला लाऊँगी। वह झोपड़ी में गयी, बुझी हुई आग फिर जलायी। देखा तो मांस उबल गया था। कुछ जल भी गया था। जल्दी–जल्दी रोटियाँ सेंकी, दूध गर्म था, उसे ठंडा किया और एक कटोरे में मालती के पास लायी। मालती ने कटोरे के भेपन पर मुँह बनाया, लेकिन दूध त्याग न सकी। मेहता झोपड़ी के द्वार पर बैठकर एक थाली में मांस और रोटियों खाने लगे। युवती खड़ी पंखा झल रही थी। मालती ने युवती से कहा उन्हें खाने दे। कहीं भागे नहीं जाते हैं। तू जाकर गाड़ी ला। युवती ने मालती की ओर एक बार सवाल की आँखों से देखा, यह क्या चाहती हैं। इनका आशय क्या है? उसे मालती के चेहरे पर रोगियों की–सी नमता और कृतिजता और याचना न दिखायी दी। उसकी जगह अभिमान और प्रमाद की झलक थी। गँवारिन मनोभावों के पहचानने में चतुर थी। बोली मैं किसी की लौंडी नहीं हूँ बाईजी। तुम बड़ी हो, अपने घर की बड़ी हो। मैं तुमसे कुछ माँगने तो नहीं जाती। मैं गाडी लेने न जाऊँगी। मालती ने डॉटा अच्छा, तूने गुस्ताखी पर कमर बाँधी! बता तू किसके इलाके में रहती है? यह राय साहब का इलाका है।''तो तुझे उन्हीं राय साहब के हाथों हंटरों से पिटवाऊँगी। 'मुझे पिटवाने से तुम्हें सुख मिले तो पिटवा लेना बाईजी। कोई रानी महारानी थोड़ी हूँ कि लस्कर भेजनी पड़ेगी।"

उपरोक्त कथन के माध्यम से प्रेमचंद मालती के अहंकार, शोषणकारी प्रवृत्ति और शहरी सभ्यता की कृत्रिमता को नग्न रूप से उजागर करता है, जबकि आदिवासी युवती की स्वाभिमान, सहजता और मानवीय गरिमा को चरम पर स्थापित करता है। मालती, धूप लगने के बाद भी अपनी रौब जमाने की कोशिश में युवती को आदेश देती है कि दवा छोड़कर मोटरकार लाने जाए, जैसे वह उसकी लौंडी हो। युवती की मेहनत से लाई जड़ी–बूटी का अनादर करती है, लेकिन स्वयं दूध पी लेती है। जब युवती रोटियाँ सेंककर, मांस परोसकर सेवा करती है और पंखा झलती है, तो मालती उसे बार–बार गाड़ी लाने के लिए धमकाती है। युवती अंततः स्पष्ट इनकार करती है "मैं किसी की लौंडी नहीं हूँ" और मालती के धमकी भरे शब्दों ("राय साहब के इलाके में रहती है", "हंटरों से पिटवाऊँगी") का जवाब देते हुए कहती है कि पिटवाने से सुख मिले तो पिटवा लेना, वह कोई रानी–महारानी नहीं है। यह दृश्य शहरी मध्यमवर्ग की दंभपूर्णता और शोषण की मानसिकता (जो सेवा को आज्ञा समझती है) के विपरीत आदिवासी जीवन की स्वतंत्रता, स्वाभिमान और सेवा की सहजता को रेखांकित करता है, युवती न तो डरती है, न झुकती है, बल्कि अपनी गरिमा बनाए रखती है, जबकि मालती का चेहरा अभिमान और प्रमाद से भरा दिखता है, जिसमें कृतज्ञता या नम्रता का अभाव है। इससे स्पष्ट प्रमाणित होती है कि सच्ची मानवता और सेवा प्राकृतिक, ग्रामीण/आदिवासी जीवन में है, न कि शहरी सभ्यता के दिखावे में।

प्रोफेसर मेहता का हालत कुछ अजीब हो गया था। प्रेमचंद इस बात को वर्णन करते हुए लिखते हैं "मेहता ने दो–चार कौर निगले थे कि मालती की यह बातें सुनी। कौर कंठ में अटक गया। जल्दी से हाथ धोया और बोले वह नहीं जायगी। में जा रहा हूँ।)मालती भी खड़ी हो गयी उसे जाना पड़ेगा। मेहता ने अँग्रेज़ी में कहा उसका अपमान करके तुम अपना सम्मान बढ़ा नहीं रही हो मालती। मालती ने फटकार बतायी ऐसी ही लौंडियों मर्दों को पसंद आती हैं, जिनमें और कोई गुण हो या न हो, उनकी टहल दौड़–दौड़कर प्रसन्न मन से करें और अपना भाग्य सराहें कि इस पुरुष ने मुझसे यह काम करने को तो कहा। वह देवियाँ हैं, शक्तियाँ हैं, विभूतियाँ हैं। मैं समझती थी, वह पुरुषत्व तुममें कम–से–कम नहीं है, लेकिन अंदर से, संस्कारों से, तुम भी वही बर्बर हो। मेहता मनोविज्ञान के पंडित थे। मालती के मनोरहस्यों को समझ रहे थे। ईर्ष्या का ऐसा अनोखा उदाहरण उन्हें कभी न मिला था। उस रमणी में, जो इतनी मृदु स्वभाव, इतनी उदार, इतनी प्रसन्नमुख थी, ईष्यो की ऐसी प्रचंड ज्वाला! बोले– कुछ भी कहो, मैं उसे न जाने दूंगा। उसकी सेवाओं और कपिओं का यह पुरस्कार देकर मैं अपनी नजरों में नीच नहीं बन सकता।

मेहता के स्वर में कुछ ऐसा तेज था कि मालती धीरे से उठी और चलने को तैयार हो गयी। उसने जलकर कहा अच्छा, तो में ही जाती हूँ, तुम उसके चरणों की पूजा करके पीछे आना। अब मुझे आजा मालती दो–तीन कदम चली गयी, तो मेहता ने युवती से कहा दो बहन, तुम्हारा यह नेह, तुम्हारी निःस्वार्थ सेवा हमेशा याद रहेगी। युवती ने दोनो हाथों से, सजलनेत्र होकर उन्हें प्रणाम किया और झोपड़ी के अंदर चली गयी।"

यह प्रसंग प्रोफेसर मेहता की आंतरिक उथल–पुथल, नैतिक दृढ़ता और आदिवासी युवती के प्रति श्रद्धा को मालती के ईर्ष्या, अहंकार और शोषणकारी मानसिकता के साथ तीव्र विरोधाभास में प्रस्तुत करता है। मालती की युवती के प्रति अपमानजनक टिप्पणियाँ (उसे "लौंडी" कहना, सेवा को पुरुषों की कमजोरी बताना) सुनकर मेहता का कौर कंठ में अटक जाता है, वह भोजन छोड़कर युवती को अपमान से बचाने का निर्णय लेता है और अंग्रेजी में मालती को समझाता है कि उसका अपमान करके वह अपना सम्मान नहीं बढ़ा रही। मालती क्रोधित होकर मेहता को "बर्बर" और "पुरुषत्वहीन" कहती है, जबकि मेहता मालती के मनोरहस्य को समझते हैं उसकी ईर्ष्या प्रचंड है, क्योंकि वह युवती की निस्वार्थ सेवा और सहज मानवता से जल रही है। मेहता दृढ़ता से कहते हैं कि युवती की सेवा का पुरस्कार अपमान देकर वह खुद को नीच नहीं बन सकता। अंत में मालती को झुकना पड़ता है और वह खुद गाड़ी लाने चल पड़ती है, जबकि मेहता युवती से भावुक होकर कहते हैं कि उसका स्नेह और निस्वार्थ सेवा हमेशा याद रहेगी। युवती सजल नेत्रों से प्रणाम करती है और झोपड़ी में चली जाती है। यह दृश्य शहरी बुद्धिजीवी की खोखली आधुनिकता और ईर्ष्या के मुकाबले प्राकृतिक जीवन की शुद्ध सेवा, स्वाभिमान और मानवतावाद की विजय दिखाता है। मेहता का चरित्र यहाँ नैतिक ऊँचाई पर पहुँचता है, जबकि मालती की संकीर्णता उजागर हो जाती है।

प्रेमचंद के कथासाहित्य में आदिवासी चरित्रों का चित्रण यद्यपि सीमित और प्रसंगिक है, तथापि यह गहन अर्थपूर्ण और प्रतीकात्मक है, जो उनकी यथार्थवादी दृष्टि को समृद्ध करता है। 'सद्गति' में चिखुरी गोंड एक सहायक लेकिन विद्रोही और जागरूक चरित्र के रूप में उभरता है, जो दलित दुखी के प्रति सहानुभूति दिखाता है, पंडित के पाखंड पर तीखा प्रहार करता है और दुखी की मौत के बाद चमारों को लाश न उठाने के लिए प्रेरित कर बहुजन एकता (दलित–आदिवासी) की संभावना को रेखांकित करता है। यह प्रेमचंद की दृष्टि में आदिवासियों की अपेक्षाकृत स्वतंत्रता, साहस और कम सामाजिक बंधनों को दर्शाता है। वहीं 'गोदान' में अनाम वन–कन्या (आदिवासी युवती) को श्रमशील, साहसी, सेवा–भाव से युक्त, स्वाभिमानी और निस्वार्थ मानवता की मिसाल के रूप में चित्रित किया गया है। वह मालती के कृत्रिम सौंदर्य और अहंकार के विपरीत प्राकृतिक सौंदर्य, त्याग और विश्व–बंधुत्व का जीवंत प्रमाण बनती है; मेहता उसके प्रति श्रद्धा और प्रेम व्यक्त करते हैं, जबकि मालती की ईर्ष्या, अपमानजनक टिप्पणियाँ और शोषणकारी आदेश उसकी संकीर्णता को उजागर करते हैं। कुल मिलाकर, प्रेमचंद ने आदिवासियों को मुख्यधारा के दलित–किसान शोषण विमर्श

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

से अलग रखा, उनकी संस्कृति या संघर्ष का गहन वर्णन नहीं किया, परंतु जहाँ उनका उल्लेख है, वहाँ वे सहायक भूमिका में भी मानवीय मूल्यों, निस्वार्थ सेवा, स्वाभिमान और प्रतिरोध की प्रतीक बनते हैंकृयह दर्शाता है कि प्राकृतिक/आदिवासी जीवन शहरी मध्यमवर्गीय कृत्रिमता से श्रेष्ठ है। इस प्रकार प्रेमचंद का योगदान आदिवासी विमर्श में अप्रत्यक्ष लेकिन प्रेरणादायक है, जो आधुनिक आदिवासी साहित्यकारों के लिए आधारभूत यथार्थवाद और मानवतावादी दृष्टि प्रदान करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सद्गति, प्रेमचंद, सर्च संसाधन केंद्र, हरियाणा, प्रथम संस्करण–2002, पृष्ठ–12.
2. https//wp.nyu.edu/virtualhindi/premchand.sadgati/
3. गोदान, प्रेमचंद, मनोज पब्लिकैशन, दिल्ली, 1998 संस्करण, पृष्ठ– 114.
4. वही, पृष्ठ–116.
5. वही, पृष्ठ–118.
6. वही, पृष्ठ–119.
7. वही, पृष्ठ–11.
8. वही, पृष्ठ–119.
9. वही, पृष्ठ–119.
10. वही, पृष्ठ–120.

*****